हिन्दी पत्रकारिता और मीडिया का सफर: एक समीक्षात्मक अध्ययन

अमान अहमद

भारत में हिन्दी मीडिया की यात्रा काफी पुरानी है। हिन्दी मीडिया ने पत्रकरिता से लेकर मीडिया तक एक सफर तय किया है, जिसमें अपने प्रारम्भिक दौर से लेकर वर्तमान तक अपने स्वरूप में बहुत परिवर्तन आया है। जिसकी भाषा से लेकर विचारों में भी बदलाव आया है। यदि हम पत्रकारिता के उद्भव एवं विकास पर चर्चा करें तो, सबसे प्रमुख समाचार पत्रों में 'उदित मार्त्तंड' सुधाकर, बनारस अख़बार, समाचार सुधावर्षण, मालवा अखबार, आदि का नाम लिया जाता है। लेकिन इन पत्रों के अलावा अन्य पत्रिकाओं ने भी समाज को केन्द्र में रखकर अपनी भूमिका अदा की, और आज भी पत्रकरिता का एक बड़ा तबका अपनी भूमिका को निभाने का प्रयास कर रहा है। देवनागरी में हिंदी का प्रथम पत्र 'उदितमार्त्तंड' 30 मई 1826 में 'युगलकिशोर शुक्ल' ने बंगाल से प्रकाशित किया था। जिसमें बंगाल में ही नहीं भारत के अन्य राज्यों में भी अपनी पहचान बनाई। इस अखबार के बन्द हो जाने के कुछ वर्ष बाद 10 मई, 1832 को राजाराम मोहन राय ने हिंदी साप्ताहिक, 'बंगदूत' का संपादन किया। राजाराम मोहन राय ने पत्र के माध्यम से 'सती प्रथा' के अंत करने का भी प्रयास किया था। राजाराम मोहन राय और उनके सहयोगी द्वारकानाथ टैगोर ने अनुभव किया था कि सामाजिक-आर्थिक-राजनीतिक सुधार आन्दोलन की अपेक्षित सक्रियता बनाये रखने के लिए स्वतंत्र पत्रों की प्राथमिक आवश्यकता है। इसी दृष्टि से उन्होंने अंग्रेज़ी, बंगला, फारसी और हिन्दी में कई पत्र प्रकाशित किये। पत्र-प्रकाशन के उद्देश्य के विषय में राजाराम मोहन राय लिखते हैं कि ''मेरा उद्देश्य मात्र इतना ही है कि जनता के सामने ऐसे बैद्रिक निबन्ध उपस्थित करूं जो उनके अनुभव को बढ़ायें और सामाजिक प्रगति में सहायक सिद्ध हों। में अपनी शक्ति-भार शासकों को अपकी प्रजा की परिस्थितियों का सही परिचय देना चाहता हूँ और प्रजा को उनके शासकों द्वारा स्थापित विधि-व्यवस्था से परिचित कराना चाहता हूँ तकि शासक जनता को अधिक से अधिक सुविधा देने का अवसर पा सके और अपनी उचित माँगों को पूरी करा सके।''[1]

हिंदी भाषा क्षेत्र में पहला अखबार जनवरी (1845) में काशी से 'बनारस अखबार' (साप्ताहिक) प्रकाशित हुआ, जिसके प्रकाशन राजा शिवप्रसाद सितारेहिंद थे। यह अखबार हिन्दी लिपि में प्रकाशित होता था किन्तु इस अखबार में अरबी-फारसी शब्दों की भरमार होती थी। 1852 ई० में आगरा से बुद्धि

प्रकाश नामक पत्र सदासुख लाल के सम्पादन में प्रकाशित हुआ इसमें इतिहास, भूगोल, शिक्षा, गणित, विज्ञान, आदि के लेख प्रकाशित होते थे। हिन्दी का प्रथम दैनिक पत्र 'समाचार सुधावर्षण' जून 1854 ई० में कलकत्ता से निकला था। इसके सम्पादक श्यामसुन्दर सेन थे। इस पत्र में प्रथम दो पृष्ठ हिन्दी तथा शेष दो पृष्ठ बंगला में होते थे। इसमें व्यापारिक, जहाजी, और देशी समाचार के साथ ही, यह ब्रिटिस नीति निर्माताओं को प्रोत्साहन परामर्श और चेतावनी भी देता था। 'सामाचार सुधावर्षण' में जातीय स्वाभिमान का स्वर काफी मुखर था। इसके आश्विन वदि 2 संवत 1912 के अंक में 'दिल्ली' शीर्षक एक सम्पादकीय टिप्पणी इस प्रकार से है- ''दिल्ली शहर में एक हलालखोरिन ने हलाली की रोटी छोड़के हरामों के रोटी पर उतारू होकर कसवा का पेषा उठाया लिया और वह भी रूपवती इस लिए एक गोरे चमडीवाला साहेब उस हलाल-खोरिन पर आशक होकर उसको घर में डाल लिया बदनामियों का टोकरा सिर पर उठा के लगाना जो है सो मारना और गू का खाना है।''[2] हिन्दी पत्रकारिता का उदय राष्ट्रीय आन्दोलन की पृष्ठभूमि में, सांस्कृतिक चेतना को विकसित करने के लिए हुआ था। व्यावसायिक उद्देश्यों से इतर त्याग और बलिदान की भावना इसमें प्रमुख थी। इस दौर का प्रमुख पत्र 'पयामे आजादी' था। इसे 8 फरवरी 1857 में स्वतंत्रता-आंदोलन के नेता अजीमुल्ला खाँ ने प्रकाशित किया था। इस पत्र ने तत्कालीन वातावरण में ऐसी जलन पैदा कर दी जिससे ब्रिटिश सरकार घबरा उठी थी और इसको बन्द कराने का प्रयास कियाऔर यह भी कहा जाता है कि जिन लोगों के घरों में इसकी प्रतियाँ पाई जातीं, उन्हें हुकूमत फाँसी पर लटका देती थी। 1857 में हिन्दी पत्रकारिता का केन्द्र कलकत्ता से निकलकर हिंदी भाषी क्षेत्रों में आने लागा। हिन्दी पत्रकारिता ने समाज में राजनीतिक जागरूकता और जन-आन्दोलन की सक्रियता को बढ़ाया। लेकिन ब्रिटिश-शासन ने भारत के प्रेस संबन्धी नियमों को और कठिन कर दिया, जिसका गहरा असर हिन्दी पत्रकरिता पर पड़ा।

भारतीय पत्रकारिता को आगे बढ़ाने में 'भारतेन्दु हरिश्चंद्र' का अहम योगदान है। उन्होंने महज़ एक कवि या लेखक ही नहीं बल्कि एक समाज सुधारक के रूप में अपनी भूमिका अदा की। उन्होंने अपनी रचना आधार, भ्रष्टशासन और ब्रिटिश शासन को बनाया। हिंदी पत्रकरिता के इस युग में, भारतेन्दु ने 'कविवचन सुधा' का प्रकाशन 15 अगस्त 1867 का काशी से प्रकाशन किया। जिसके द्वारा समान्य जन में अपनी मात्रभूमि और समाज के प्रति प्रेम की भावना को जगाने का काम किया। डॉ० रामविलास शर्मा के शब्दों में ''भारतेन्दु ने कविवचन सुधा के द्वारा हिन्दी में निर्भीक पत्रकार-कला का आदर्श लोगों के

सामने रखा उनके पहले लोगों ने पत्र निकाले थे उनमें से एक निश्चित उद्देश्य के लिए नहीं लड़ा था।''[3] अम्बिका प्रसाद बाजपेयी के अनुसार जिस समय 'कविवचन सुधा' (1868) का जन्म हुआ था वह समय अँग्रेज अधिकारियों के सामने हाथ जोड़े खाड़े रहने का था। उस समय 'नारिनर सम होहिं' और 'स्वत्व निज भारत गहै' कहने वाले भारतेन्दु जैसे साहसी राष्ट्र निर्माता ही हो सकते हैं। उसी कड़ी के रूप में हिन्दी को 'नयी चाल में ढालने वाली' राष्ट्रीय उदबोधन और सरकार की भर्त्सना के लिए छिपकर व्यंग्य करने वाली 'हरिश्चन्द्र मैमज़ीन' का प्रकाशन भारतेन्दु ने ही 15 अक्टूबर 1873 में किया था। इस पत्रिका ने अंधरूढ़िवादित, औपनिवेशिक साम्राज्यवाद तथा सामन्ती संस्कृति के विरूद्ध कभी राज शक्ति की चाशनी में भिगोकर रोषपूर्ण व्यंग्यात्मक तेवर दिखलाये थे, फलतः इस सजग राष्ट्रीय पत्रिका की भी प्रतियाँ सरकार ने बंदकर दी थीं। आचार्य रामचंद्र शुक्ल का कथन कितना सटीक है ''हिंदी गद्य का ठीक परिष्कृतरूप पहले-पहले इसी चंद्रिका में प्रकट हुआ। जिस प्यारी हिंदी को देश ने अपनी विभूति समझा, जिसको जनता ने उत्कण्ठापूर्वक दौड़कर अपनाया, उसका दर्शन इसी पत्रिका से हुआ।''[4] उन्होंने देवनागरी-फारसी लिपि और भाषा विवाद के समाधान में सजीव परिष्कृत जनभाषा के लिए व्यापक उदार दृष्टिकोण और दूरदर्षिता का परिचय दिया था।

इसी कड़ी के रूप में भारतेन्दु हरिश्चंद ने महिला की शिक्षा के लिए 'बाला बोधिनी' (1874) पत्रिका प्रकाशित की थी। इन पत्रिकाओं के समकालीन अन्य पत्रिकाओं में हिन्दी प्रदीपब्राहम्ण, हिन्दुस्तान, भारतमित्र, सारसुरानिधि आदि का भी अपना अलग ही महत्व है। हिन्दी के प्रचार प्रसार के लिएइन सभी प्रत्रिकाओं में कविता, कहानी, नाटक, आलोचना, आदि प्रकाशित होते रहते थे। सभी लेखक एवं कवियों का मतंव्य था कि समाज की भाषा एक समान्य एवं सर्वमान्य होनी चाहिए और इस भाषा के रूप में हिंदी ही प्रतिष्ठित हो सकती थी। साहित्यकरों की हमेशा यही कोशिश रही कि पत्राचार की भाषा सुगम और सरल ही रहे, क्यांकि भाषा यदि सरल होगी तो वह सामान्य जन तक आसानी से पहुँच सकेगी। भारतेंदु मंडल के लेखकों ने देश में, ब्रिटिस साम्राज्यवाद की दमन नीतियों, आर्थिक शोषण, और भाषा को लेकर उनके और उनके मंडल के पत्रकारों के विचार युग सापेक्ष और परिर्वतनकारी रहे। जाति एकता के साथ-साथ ही उन्होंने धार्मिक भेद-भाव की समाप्ति के लिए अनेक प्रयत्न किए। 1857 में भरतेन्दु ने हरिश्चंद मैगजीन या चंद्रिका का प्रकाशन किया। इन दोनों से हिंदी पत्रकारिता के अनेक पक्ष हिंदी में आये। भारतेन्दु युग में हिंदी प्रदीप आनंद कादम्बिनी ब्‍रहम्ण भारतोदय आदि पत्रों ने पत्रकारिता के क्षेत्र में हिंदी

को प्रतिष्ठित करने में बहुत योग दिया।[5] तीसवीं शताब्दी के पहले चरण (1900-1920) पत्रकारिता का तीसरा दौर माना जाता है। इस काल की सबसे प्रमुख पत्रिका 'सरस्वती' रही जिसके संपादन कार्यभार सर्वप्रथम श्यामसुन्दर दास ने (1900 से 1903) तक संभाला था लेकिन आगे इसके प्रकाशन का कार्यभार 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी जी ने ही संभाला था। इस पत्रिका के अलावा प्रभा, कर्मयोगी, हिंदी केसरी, दैनिक भारत मित्र और गणेश शंकर विद्यार्थी, प्रतापनारायण मिश्र इस दौर की पत्रकारिता के मुख्य स्तंभ माने जाते है।

इस युग पर सबसे ज्यादा प्रभाव महावीर प्रसाद द्विवेदी और लोकमान्य तिलक का पड़ा। द्विवेदी जी ने 'सरस्वती' के माध्यम से साहित्य और भाषा दोनों को नया रूप देने का कार्य किया। इसी दौर में तिलक के मराठी 'केसरी' दैनिक ने राजनीतिक जड़ता को तोड़कर समाज को अपने स्वराज्य को पूर्ण स्वतंत्र कराने के लिए पेरित किया। 1890 में 'केसरी' के संपादन का कार्य बालगंगाधार तिलक ने ही किया था। उनका भी इस युग में अपना अहम योगदान है। वे अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता के पक्षधर थे। उनकी भाषा और लेखनी सामान्य जन को बहुत प्रभावित करती थी। केसरी में ही तिलक के लेखों का अनुवाद करके 'हिन्दी केसरी' में प्रकाशित होता था। इसलिए यह पत्र एक गरमदल का प्रामाणिक पत्र था। सहित्यिक पत्रिका के रूप में पत्रकरिता का जिम्मा सरस्वती पत्रिका ने लिया 1903 में महावीर प्रसाद द्विवेदी पत्रिका के प्रधान संपादक बने। इस पत्रिका ने साहित्य, कला, संस्कृति, भाषा धर्म, अन्य क्षेत्रों में अपनी महत्वपूर्ण भूमिका अदा की। सरस्वती पत्रिका ने खड़ीबोली के विकास में अपना योगदान दिया और कविता में ब्रजभाषा के स्थान पर खड़ीबोली के लिए गद्य की विविध शैलियों के विकास के लिए, साहित्यक समालोचन के लिए, प्रमुख रूप से प्रयास किया। इस पत्रिका के अतिरिक्त 'नागरी प्रचारिणी' समालोचना, 'छत्तीसगढ़ मित्र' आदि भी इस युग की महत्तवपूर्ण पत्रिका थी जिसने हिन्दी के विकास में अहम योगदान दिया। 9 नवम्बर 1913 में कानपुर से प्रताप पत्रिका प्रकाशन गणेश शंकर विद्यार्थी जी ने किया। प्रताप के प्रथम पृष्ठ पर यह पंक्तियाँ प्रकाशित होतीं थीं-

''जिनको न निज गौरव तथा निज देश का अभिमान है।

वह नर नहीं, नर-पशु निरा है और मृतक समान है।।

इस कड़ी के रूप में अन्य पत्रिकायें, 'देवनागर' (1907) कलकत्ता, अम्युदय(1907) प्रयाग, कर्मयोगी(1907) प्रयाग आदि भी इसी युग के राजनीतिक पत्र थे। 1920 के बाद भारतीय राजनीति अहिंसा के पुजारी गाँधी जी के हाथ में आ गयी। गाँधी जी स्वयं एक पत्रकार थे और पत्रकारिता को वैचारिक क्रांति का शसक्त माध्यम मानते थे। इसलिए उन्होंने कहा था, "ऐसी कोई भी लड़ाई जिसका अत्मबल ही, अखबार की सहायता के बिना नहीं चलायी जा सकती। जलियाँ वाला बाग हत्या काण्ड के बाद अंग्रेजों का दमन और तेज हुआ। ऐसे समय में 'यंग इण्डिया' का प्रकाशन हुआ, जिसका संपादन गाँधी जी ने किया था। साथ ही 'हिन्दी नवजीवन' को भी प्रारम्भ कर दिया। और आगे चलकर 'यंग इंण्डिया' नवजीवन और हिन्दी नव जीवन तीनों के नाम हरिजन रख दिये गये। हरिजन पत्र हिन्दी, अंग्रेजी, और गुजराती तीनों ही भाषा में छपने लगा था।[6] 8 अगस्त सन् 1942 ई० में एक आदेश के अंतर्गत असहयोग अन्दोलन से संबन्धित सभी समाचारों के प्रकाशन में रोक लगा दी गयी। गाँधी युग की पत्रकरिता की सबसे अहम उपलब्धि यह है कि इस युग में साहित्यक पत्रकारिता राजनीति से अलग हो गई। मतवाला, सुधा, चाँद, माधुरी, हंस, और विशाल भारत जैसी पत्रिकायें भी इसी समय निकली थीं। जिन की अपनी एक अलग ही पहचान है।

वर्तमान में हिंदी पत्रकरिता में यह स्वरूप एक दम बदल चुका है। आज की मीडिया और पत्रकारित के कार्य-व्यापार और शक्ल सूरत में बहुत बदलाव आया है। पूँजीवाद और राजनीति मीडिया को अपना गुलाम बनाने की कोशिस कर रहा है, शायद कुछ चैनल गुलाम बन भी गये हैं। अगर ऐसा हुआ तो पत्रकरिता और मीडिया अपनी पहचान ही खो देगें, और केवल व्यर्थ की चींजें ही बनकर रह जायेंगी। मीडिया लोकतन्त्र का एक प्रमुख हथियार है, जिसे लोकतंत्र का चौथा हथियार माना जाता है। क्योंकि मीडिया ही सरकार के कर्त्तव्यों पर नज़र रखती है, और उसे उजागर करके उसकी पोल खोलती है। अगर हम कहें कि मीडिया ही गरीबों का साथी है तो इसमें कोई हरज़ नहीं है। आज हम देखते है कि न्यूज चैनल पर कुछ खबरों को बहुत ही बढ़ा चढ़ा कर पेश कर दिया जाता है, बल्कि कुछ ऐसा होता नहीं है। जैसे जब एक बैलगाड़ी किसी रेलगाड़ी से टकराकर चकना चूर हो गयी, तो एक समाचार-पत्र में शीर्षक छपा- 'ट्रेन बैलगाड़ी भिडन्त' अब इस तरह का शीर्षक एकदम हास्यास्पद सा लगता है। क्योंकि भिंडन्त तो सदैव बराबर वालों में ही होती है। इलैक्ट्रॉनिक मीडिया विभिन्न चैनलों द्वारा दिखाई जा रही खबरों के द्वारा सरकार की जिम्मेदारी को निभाता जा रहा है। सरकार में जो भी आज घोटाले होते है जिन पर

मिडिया नजर रखती है, और उनको उजागर भी करती है। जैसे मीडिया ने चीनी घोटाला, चारा घोटाला आदिका पर्दाफास करके सभी के सामने उजागर किया है। जो भी राजनेता इस तरह की घटनाओं में दोशी पाया गया उसे मीडिया ने ही उनको कठघरे में लाकर खड़ा किया है। आज मीडिया ने ही जनता को जगरूक किया हैऔर अपने अधिकारों के प्रति भी सजग किया है। राजनीति ही नहीं बल्कि अन्य क्षेत्रों जैसे न्यायपालिका, व्यवस्थापिका तथा कार्यपलिका सभी को सही दिशा देने का काम भी मीडिया ने ही किया है। देश के विभिन्न मुद्दों पर विचार-विमर्श करने के लिए समाचार चैनल संगोष्ठियों का आयोजन करते हैं जिसमें उस विषय के विशेषज्ञों को अमन्त्रित, तथा राजनेताओं को भी बुलाते हैं और जो निर्णय निकलता है, उसे सरकार को अवगत किया जाता है। आज मीडिया के द्वारा ही शिक्षा-व्यवस्था में सुधार आया है, जैसे कि मिड-डे-मील की व्यवस्था हमारे प्रदेश में या अन्य प्रदेशों में बहुत भी खराब है, जिसको मीडिया ने उजागर करके, सरकार को अवगत कराया, और इसमें लिप्त विचौलियों का पर्दाफांस किया है। आज इलैक्ट्रोनिक मीडिया का महत्व बढ़ा है। इसके माध्यम से नागरिकों को अपने अधिकारों तथा कर्त्तव्यों का बोध हुआ है। आज मीडिया की नजरें साधारण जनता से लेकर उच्च अधिकरियों तक फैली हुई है। आज भी मीडिया बहुत तेज है घटना के घटते ही इसकी सूचना चंद मिनटों में ही समाज में फैल जाती है।

इस प्रकार हम कह सकते है कि मीडिया समाज में एक रक्षक का काम कर रही है। और यह सरकार को सही दिशा निर्देश देने का भी काम बखूबी निभा रही है और एक सच्चे अर्थों में लोकतंत्र की स्थापना भी कर रही है।

संदर्भ सूची:-

1. अजय कुमार सिंह, मीडिया की बदलती भाषा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण-2012, पृ०-105
2. वही, पृ०-109
3. रामविलास शर्मा, भाषा और समाज, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-2008
4. भारतेन्दु युग और हिंदी भाषा की परम्परा, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, संस्करण-1975
5. आचार्य रामचंद्र शुक्ल, हिंदी साहित्य का इतिहास, लोकभारती प्रकाशन, संस्करण-2012, पृ०-315
6. विजेन्द्रस्नातक, हिन्दी साहित्य का इतिहास, साहित्य अकादेमी प्रकाशन, नई दिल्ली पुनर्मुद्रण, संस्करण-2015
7. अजय कुमार सिंह, मीडिया की बदलती भाषा, लोकभारती प्रकाशन, इलाहाबाद संस्करण-2012, पृ०-119

वितस्ता २०२१